ज्योतिर्गमय

संस्कृतनिष्ठ बाल-मासिक पत्रिका

विषय: - पुत्रीं रक्ष पुत्रीं पाठय / बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ...

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता: ।
यत्रैता: न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला: क्रिया: ।।

आत्मानं विद्धि

अंक - ६२ जनवरी २०२६ माघ मास, विक्रम संवत् २०८२
मानव भारती देहरादून - विद्यालयस्य प्रयास:

"या गार्गी श्रुतचिन्तने नृपनये पाञ्चालिका विक्रमे, लक्ष्मी: शत्रुविदारणे गगनं विज्ञानाङ्गणे कल्पना।
इन्द्रोद्योगपथे च खेलजगति ख्याताभित: साइना, सेयं स्त्री सकलासु दिक्षु सबला सर्वै: सदोत्साह्यताम् ।।"

बेटियों ने रचा इतिहास - बेटियाँ विश्व चैंपियन बनीं...

भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने वर्ल्ड कप जीत कर विश्व मंच पर देश का मस्तक ऊंचा किया है। हमारी बेटियों ने अपने अदम्य साहस, कठोर परिश्रम और अनुशासन के बल पर खेल इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अपना नाम दर्ज किया है। विश्व चैंपियन भारतीय टीम को बहुत-बहुत बधाई। "त्वमुतिष्ठ यशो लभस्व" तुम उठो और गौरव हासिल करो...।
यह विजय केवल एक ट्रॉफी की जीत नहीं, बल्कि उन करोड़ों सपनों की उड़ान है जो गलियों और छोटे गांवों से निकलकर आसमान छूने का जज्बा रखते हैं। मैदान पर आपकी हर गूँज ने यह साबित कर दिया है कि हुनर और हौसला किसी सीमा या जेंडर के मोहताज नहीं होते।

भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने वर्ल्ड कप जीत कर विश्व मंच पर देश का मस्तक ऊंचा किया है। हमारी बेटियों ने अपने अदम्य साहस, कठोर परिश्रम और अनुशासन के बल पर खेल इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अपना नाम दर्ज किया है। विश्व चैंपियन भारतीय टीम को बहुत-बहुत बधाई। "त्वमुतिष्ठ यशो लभस्व" तुम उठो और गौरव हासिल करो...। यह विजय केवल एक ट्रॉफी की जीत नहीं, बल्कि उन करोड़ों सपनों की उड़ान है जो गलियों और छोटे गांवों से निकलकर आसमान छूने का जज्बा रखते हैं। मैदान पर आपकी हर गूँज ने यह साबित कर दिया है कि हुनर और हौसला किसी सीमा या जेंडर के मोहताज नहीं होते।

प्रकृति का सबसे सुन्दरम उपहार होती है बेटियाँ...

- आशिता चौहान, १०वीं अ, तक्षशिला सदन

बेटी घर की शान होती है, बेटी घर की जान होती है । हमें बेटी और बेटे में फर्क नहीं करना चाहिए, एक हिसाब से देखें बेटियाँ लक्ष्मी का रूप होती हैं । बेटे को हमारे समाज ने उच्च महत्व का दर्जा दिया है, बेटे को ही घर का प्रधान व जिम्मेदार बताया है परन्तु बेटियाँ भी कम नहीं होती हैं। बेटियाँ समाज में सहनशीलता का प्रतीक हैं। बेटियाँ संसार को चलाती हैं। बेटियाँ दो परिवारों को चलाती हैं, पिता का घर और ससुराल का घर दोनों घरों की जिम्मेदारी अच्छे से निभाती हैं। हमें बेटे और बेटी की तुलना नहीं करनी चाहिए। दोनों को ही समान दर्जा देना चाहिए। आज हमारे देश की बेटियाँ हर मुकाम पर सफलता प्राप्त कर रही हैं । चाहे वह राजनीति हो , खेल हो या अन्तरिक्ष यात्रा ही क्यों न हो। देश की उन्नति और विकास में बेटियाँ अपना पूर्ण योगदान दे रही हैं । प्रकृति का सबसे नायाब तोहफा होती है बेटियाँ। एक बेटी के मन में हमेशा अपने माँ-बाप के प्रति प्रेम और स्नेह रहता है। बेटी से ही घर में खुशहाली और रौनक रहती है। बेटी की शादी होते ही माँ-बाप को ऐसा महसूस होता है कि खत्म हो गया सारा मेला, उड़ गई हमारे आंगन की चिड़िया और घर हो गया अकेला । माँ-बाप को बेटी की कीमत तब नजर आती है जब बेटी ससुराल चली जाती है। बेटा तो सिर्फ भाग्य से मिलता है और बेटियाँ सौभाग्य से मिलती हैं। शायद हर किसी माँ-बाप को यही बात अपनी बेटियों की बचपन में ही समझ आ जाए फिर बेटियों के प्रति समाज में बेटी व बेटे में कोई अन्तर न रहे ।
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कोई नारा नहीं है बल्कि यह हमारी पूजनीय धरोहर है।

- खुशी, पंचम ५वीं

यत्र नार्यस्तु पूज्यनते , रमन्ते तत्र देवता: ।
अर्थात् जहाँ नारियों का सम्मान होता है वहाँ देवता निवास करते हैं ।

कन्याओं को संस्कृत शिक्षा...

कन्याओं को भी अब हम सब संस्कृत
खूब पढ़ावें,
भारतीय संस्कृति की घर-घर कीर्ति
ध्वजा फहरावें।
गार्गी- मैत्रेई- आत्रेई- सम विदुशी महिलाएं ,
हुईं यहीं जिनकी चर्चा से मुखरित
सभी दिशाएं।
शास्त्र- निपुण संगीत विशारद, कला
कुशल कवयित्री-
वनिताओं से कभी रही यह भूषित
भव्य धरित्री।
उसी दृश्य को फिर हम अपने घर- घर
में फैलावें,
कन्याओं को संस्कृत की हम विदुषी
पुनः बनावें।।
किसी समय जल भरने वाली भी
दासी- वनिताएं ,
रचती थीं इस अमरभारती में
सुललित कविताएं।
कभी यहीं पर मालिन रमणी कविता
मधुर सुनाती
भोजराज की कविसंसद् में महिलाएं
भी आतीं।
आज हमारी कन्याएं भी कवयित्री बन जावें,
संस्कृत का हम इतना उत्तम उनको
ज्ञान करावें।।
अंग्रेजी शिक्षा जो पाती स्कूलों में कन्याएं,
उनकी चर्चाओं से दु:खी सभी पिता- माताएं।
आज दृश्य जो दीख रहा है घर-घर
हृदय- विदारण,
संस्कृत- शिक्षा से ही उसका हो सकता
है वारण।
कन्या संस्कृत विद्यालय भी अब हम
लोग चलावें,
कम से कम थोड़ी सी संस्कृत-शिक्षा
उन्हें अवश्य दिलावें।।

- पं. वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

नैतिक शिक्षा - श्लोक:

ॐ ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ॥
- (ईशोपनिषद्- १)

अर्थात् - मनुष्यों के प्रति वेदभगवान्का पवित्र आदेश है कि अखिल विश्व-ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी यह चर अचर जगत् , सर्वाधिपति, सर्वशक्तिमान्, परमेश्वर से व्याप्त है; यों समझकर उन ईश्वर का स्मरण करते हुए ही तुम इस जगत् में ममता और आसक्तिका त्याग करके केवल कर्तव्य पालन के लिये ही विषयों का यथाविधि उपभोग करो अर्थात् - विश्वरूप ईश्वरकी पूजा के लिये ही कर्मों का आचरण करो। विषयों में मन को मत फँसने दो, इसी में तुम्हारा निश्चित कल्याण है। ये सब परमेश्वर के हैं और उन्हीं की प्रसन्नताके लिये इनका उपयोग होना चाहिये।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतः समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥
- (ईशोपनिषद्- २)

अर्थात् - इस जगत् में ईश्वर के प्रति समर्पित भाव से शास्त्रोक्त कर्म करते हुए सौ वर्षों तक जीने की कामना करनी चाहिए। ऐसा करने से मनुष्य में कर्म लिप्त नहीं होंगे, कर्म बन्धन से बचने का इससे अन्य कोई मार्ग नहीं है।

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसाऽऽवृताः ।
तांस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः ॥
- (ईशोपनिषद्- ३)

अर्थात् - असुरों के जो प्रसिद्ध नाना प्रकार की योनियाँ एवं नरकरूप लोक हैं; वे सभी अज्ञान तथा दु:ख-क्लेशरूप महान् अन्धकारसे आच्छादित हैं; जो कोई भी आत्महत्या करनेवाले मनुष्य होते हैं, वे मरकर उन्हीं भयंकर लोकों को बार-बार प्राप्त होते हैं।

मधुरं संस्कृतम् - २० (संस्कृत- समानार्थक- शब्दा:)

१. सूर्य: - रवि:, भानु: , दिनेश:, दिनकर: , दिवापति:
२. अग्नि: - पावक: , अनल:, हुताशन:
३. वायु: - पवन: , अनिल:, वात:
४. पृथ्वी - वसुधा, वसुन्धरा, धरा, भूमि:
५. असुर: - दानव, दैत्य, राक्षस, निशाचर
६. अहंकार: - गर्व, मद, दर्प, अभिमानम्
७. गणेश: - गजानन:, लम्बोदर:, विनायक:
८. गंगा - मन्दाकिनी, भागीरथी, सुरनदी, देवनदी
९. गज: - हस्ती, करी, मातंग:, द्विप:
१०. गृहम् - आलय:, सदनम् , भवनम्
११. आकाश: - नभ:, अम्बरम् , अन्तरिक्षम्
१२. कमलम् - अम्बुजम् , सरसिजम् , पद्मम्
१३. रात्रि: - निशा, रजनी, यामिनी
१४. राजा - नृप:, नरेश:, महीपति: , नृपति:
१५. दु:खम् - कष्टम् ,पीड़ा, वेदना, क्लेश:
१६. समुद्र: - जलधि: , नीरधि:, वारिधि:, पयोधि:
१७. पुत्र: - सुत: , आत्मज: , तनय:
१८. पुत्री - सुता, आत्मजा, तनया
१९. पक्षी - खग: , द्विज: , विंग:
२०. भ्रमर: - मधुप: अलि: , मधुकर: ।

सरस्वती स्तुतिः वाणी वन्दना...

सरस्वति ! नमस्तुभ्यं वरदे कामरुपिणि !
विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा ।।

सलिले हंस: हंसे कमलम्
कमले तिष्ठति सरस्वती।
हस्ते माला करे पुस्तकम्
करयुगले वीणा वसति ।।

हंसविवेकं वांछाम:
कमलविमलताम् इच्छाम:।
माला- पुस्तक- वीणाभि:
तमसो ज्योतिर्गच्छाम: ।।

श्वेताक्षी शुक्लवस्त्रा च, श्वेत- चन्दन-चर्चिता।
वरदा सिन्धु- गन्धर्वै: , ऋषिभि: स्तूयते सदा।।
या देवी स्तूयते नित्यं, ब्रह्मेन्द्र - सुर- किन्नरै:।।
सा ममैवास्तु जिह्वाग्रे, पद्महस्ता सरस्वती ।।

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युत शंकरप्रभृतिभिर्देवै: सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती नि:शेषजाड्यापहा ॥

शुक्लां ब्रह्मविचार सार परमामाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणा-पुस्तक-धारिणीमभयदां
जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने
संस्थिताम्
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥

कस्तूरिका- विन्दु- विराजि- भालाम्
करे दधानां स्फटिकाक्षमालाम्।
ओष्ठ- प्रभा- निर्जित- सत्प्रवालाम्
त्वां नौमि नित्यं शिरसाऽऽदिबालाम्।।

अदिति भार्गव ११वीं पी. सी. बी

वीणावादिनि वर दे !

वर दे , वीणावादिनि वर दे !
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र -नव
भारत में भर दे !
काट अंध-उर के बंधन-स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय- निर्झर;
कलुष-भेद-तम हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे !
नव -गति, नव -लय, ताल-छंद नव-
नवल- कंठ, नव -जलद-मन्द्ररव ,
नव- नभ के नव -विहग-वृंद को
नव पर, नव -स्वर दे !
वर दे, वीणावादिनि वर दे !

- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

वसंत उत्सव का प्रतीक नहीं बल्कि स्वयं में महान् उत्सव है, जीवन में वसंत आने के लिए पहले पतझड़ का आना जरूरी है। जब आप भीतर- बाहर दोनों से खाली हो जाते हैं तो वसंत आता है और जब प्रकृति के साथ- साथ जीवन में वसंत आता है तो यह शाश्वत होता है। इसलिए आइये हम सभी हमेशा के लिए थोड़ा- सा वसंत हो जाएं ।

- सम्पादक "ज्योतिर्गमय"

।। कथम् आगतो रे समयो विचित्रः ।।

कथम् आगतो रे समयो विचित्रः।
खलो मन्यते बहु समाजे विशिष्टः।।

धनं यस्य पार्श्वे जनस्तत्कुलीनः।
भ्रष्टोऽपि नितरां ज्ञायते प्रवीणः।
आदर्शभूतः धिक् कर्मनिष्ठः।।
कथम्.....।।

भ्राता स्वभ्रात्रे भवत्येव क्रुद्धः।
पितरौ सपुत्रौ मार्गे भ्रमन्तः।
हा रोदितीह नितरां मनुजता।।
कथम्.....।

चाकचिक्यपाशे बद्धो मनुष्यः।
विस्मारितस्तेन परिचयस्स्वकीयः।
स्वार्थाय क्रियन्ते नियमा निकृष्टाः।।
कथम्.....।

निजसंस्कृतौ नायं गर्वं हि कुरुते।
परसंस्कृतिं खलु बहुनाभिमनुते।
निन्दति सदा सत्यलग्नान् मनुष्यः।।
कथम्.....।

देशस्य श्रेष्ठे पदे राजतेऽयम्।
सेवां विहाय किं कुरुतेऽयम्।
वाचा न किं किं ब्रूते मनुष्यः।।
कथम्.....।

गावं विहाय हा श्वानं बिभर्ति।
शाकं विहाय हा मांसं भुनक्ति।
सुरापानलीनो भ्रमति मनुष्यः।।
कथम्.....।

- डॉ. विपिन कुमार द्विवेदी

वाणी- वन्दना ....

निनादय नवीनामये वाणि ! वीणाम् ।
मृदुं गाय गीतिं ललित- नीति लीनाम् ।।
मधुर- मंजरी- पिंजरीभूत- माला:,
वसन्ते लसन्तीह सरसा रसाला: ,
कलापा: कलित- कोकिला- काकलीनाम् ।
निनादय नवीनामये वाणि वीणाम् ।।
वहति मन्द - मन्दं समीरे सनीरे ,
कलिन्दात्मजाया: सवानीर- तीरे ,
नतां पंक्तिमालोक्य मधुमाधवीनाम्।
निनादय नवीनामये वाणि ! वीणाम् ।।

- श्रीजानकीवल्लभ शास्त्री

।। संस्कृत- गीतम् ।।

खुशी कक्षा - पंचम ५वीं

समायातः पुनस्साकेतमवधेशः सुखं मन्ये
प्रसन्ना पद्मिनी दिननाथमवलोक्याधुना मन्ये।
चतुर्दशवर्षवनवासो भवत्त्रेतायुगे बन्धो
चिरात्तम्बूनिवासादागमो$स्त्यधुना सुखं मन्ये ।।

वने दुःखं सुखं कृत्वा स्थिता सीतेति जानीमः
विधेःकृपया हृता सीता स्वयं वा वंचितो रामः।
परं गेहे निबद्धः केन विधिना नैव जानीमः
विशिष्टे मन्दिरे त्वधुना प्रवेशं सत्सुखं मन्ये ।।
समायातः .....।।

हता खरदूषणा बहवो विराधा वा कबन्धा वा पुनश्शाखामृगैर्बद्धस्समुद्रो वा हता लंका।
त्रियामा सूर्पनखबालेव विकला धावतीहापि परं
नवपुष्पकागमनध्वनिश्रवणं सुखं मन्ये ।।
समायातः .....।।

नवेयं लंकिनी बजरंगमुष्ट्यैवाहता मन्ये
स्फुरत्कोदण्डसन्धानत्तरंगेशो नतो मन्ये।
प्रलयकालान्तमेघोत्तालगर्जनमत्तमत्तानां
विनष्टाश्शक्तयस्समरांगने परमं सुखं मन्ये ।।
समायातः .....

- गीतकारः - डॉ.निरञ्जनमिश्रः

प्यारी कलिका

{ पुत्रीं रक्ष पुत्रीं पाठय / बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ }

१. सरस्वती की शोभा कलिका
कृष्णप्रेम की गाथा कलिका ।
अनन्त की पूजा मैं कलिका
विष्णुप्रिया की प्यारी कलिका ।।

२. फूलों की शक्ति मैं कलिका
बागों की शोभा मैं कलिका ।
मैं हूँ कलिका प्यारी कलिका
खुशबू फैलाने वाली कलिका ।।

३. मीठी- मीठी खुशबू फैलाने वाली कलिका
वरमाला में गूथे जाने वाली कलिका ।
देवों के शीश चढ़ने वाली कलिका
लोगों का मन मोह लेने वाली कलिका ।।

४. सम्राटों की शोभा करने वाली कलिका
वीरों की खुशबू फैलाने वाली कलिका ।
चटक - चटक रंगो से भरी है कलिका
हर मौसम में फूल देने वाली कलिका ।।

५. अनन्तमणि की प्यारी कलिका
पूजा के अरमानों की कलिका ।
मणिका की अनुजा मैं कलिका
मैं हूँ कलिका प्यारी कलिका
खुशबू फैलाने वाली कलिका ।।

६. शुभांग की शुभ प्यारी बहना
परमधाम से आई हूँ ।
पञ्चतत्त्व की बनी है काया
उसमें आकर समाई हूँ ।।

७. संगम युग पर सागर - नदियाँ
मिलन मनाने आये हैं ।
फूल रंगीले बादल मौसम
मेरे मन को भाये हैं ।।

८. रजोगुणी नहीं तमोगुणी नहीं
सतोगुणी कहलाना है।
पवित्रता की मूरत बनकर
स्नेह प्रेम बरसाना है ।।

९. चौरासी जन्मों की गाथा
अपने साथ में लाई हूँ ।
धरती माता की बेटी बन
सबके मन को भाई हूँ ।।

१०. सूरज से है तेज ये कलिका
चाँद की शीतल छाँव है कलिका।
झिलमिल तारों सी प्यारी है
पापा की सौगात है कलिका ।।

मैं हूँ कलिका प्यारी कलिका
खुशबू फैलाने वाली कलिका ।।

११. न कुचलो नन्हीं कलियों को,
उनको भी जग में आने दो ।
बनकर फूल खिलेगी एक दिन
जीवन और शिक्षा पाने दो ।।

(बेटी बचायें घर तथा समाज के साथ
राष्ट्र की मुस्कान बढ़ायें .....)

- कलिका त्रिवेदी, १० ब

आनन्द सुधा नारी...

नारी तुम जीवन हो, सम्बल हो शक्ति हो,
श्रद्धा हो मेरी तुम, मेरे परिवार कुटुम्बों की।
विश्वास तुम्हीं से है, हर आस तुम्हीं से है,
इस नग- पग- तल में नारी, तुम शक्ति मेरी हो।
सूरज से तेज हो तुम, हो चांद की शीतल छांव,
झिलमिल तारों सी हो, तुम ब्रह्मा की सौगात।
संगीत के सात- स्वरों में, पायल की झंकारों में,
सात- सुरों की तुम, सरगम वीणा की हो ।
नारी तुम जीवन हो, संबल हो शक्ति हो,
श्रद्धा हो मेरी तुम, मेरे परिवार कुटुंबों की।।

घर की मुस्कान तुम्हीं से, तुम लक्ष्मी हो नारी,
दुर्गा इंदिरा तुम हो, लक्ष्मीबाई नारी ।
कर्म क्षेत्र में तुम, नित बढ़ती हो नारी ,
हम सब हैं तेरे सेवक, हे वसुधा की नारी !
नारी तुम मुक्ति पथ हो,हो ज्योति अभिमानी,
तुम राम की सीता हो , कान्हा की राधा हो ।
उर्मिला का त्याग तुम्हीं, पांडव की माता तुम,
संघर्षों का इतिहास ज्योतिर्मय तुमसे है ।।

पहचान तुम्हीं से है, मर्यादा की नारी ,
ईमान तुम्हीं नारी, इतिहास तुम्हीं नारी ।
लाखों की रोजी रोटी की तस्वीर तुम्हीं नारी,
हम सब के जीवन की तकदीर तुम्हीं नारी ।
भारत की श्रद्धा हो सम्मान तुम्हीं नारी,
आदर्श प्रवाहित है पावन विचार नारी ।
धरती के ममता की श्रृंगार गले की नारी ,
हे मानवता- दातृ ! आनन्द सुधा नारी।

बहनों का प्यार तुम्हीं पत्नी का समर्पण तुम,
भाभी हो भावना की, मामी मौसी हो तुम।
चाची की साधना तुम कर्तव्य हो काकी की,
मां बन कर तुम आती , जीवन सम्बल नारी।
दामन में तेरे हैं उम्मीद कारवां की,
है चाहत हम सबकी तुम मुस्कुराओ नारी ।

जीवन का हर वसंत , तुम्हें खुशियां दें अनन्त,
उत्साह भरे मन में , भर दे जीवन में रंग।
हम करते अभिनंदन हे मातृशक्ति नारी !
हम करते नित वंदन श्रद्धा से हे नारी !
तुम मस्त रहो नारी, तुम व्यस्त रहो नारी,
तुम स्नेह करो सबको, युग- परिवर्तन नारी ।
नारी तुम जीवन हो, सम्बल हो शक्ति हो,
हम सबके जीवन की आनंद सुधा नारी ।।
आनंद सुधा नारी । आनंद सुधा नारी।।

या गार्गी श्रुतचिंतने नृपनये पांचालिका विक्रमे
लक्ष्मी: शत्रु विदारणे गगनं विज्ञानांगणे कल्पना।
इंद्रोद्योगपथे च खेलजगति ख्याताभित: साइना
सेयं स्त्री सकलासु दिक्षु सबला सर्वै: सदोत्साह्यताम्।।

- डॉ.अनन्तमणि त्रिवेदी

शान होती हैं बेटियाँ

माँ की दुलारी और
पिता की शान होती है बेटियाँ
हर खूबसूरत सुबह की
कोमल मुस्कान होती है बेटियाँ।
घर की खुशहाली और
ईश्वर की वरदान होती है बेटियाँ
ममता के हर रूप की
पहचान होती है बेटियाँ।
इसके बिना वात्सल्य निराधार है
वह तो रिश्ते की सुंदर श्रृंगार है
दु:ख आते ही वो
शीतल छांव की भरमार है।
बेटी के त्याग की कोई मूल नहीं
बेटी बिन घर सुना संसार है।

- सृष्टि शर्मा, ८ ब

घर की ज्योति : बेटी

बेटी घर की ज्योति बेटी जीवन की प्रीति
घर की चौखट सूनी है, बेटी के बिना
दीपक की लौ अधूरी है, बेटी के बिना।

वह है आँगन की पहली हँसी,
वह है जीवन की मधुर रागिनी।

माँ के स्वप्नों की उजली छाया,
पिता के हृदय की धड़कन माया।

जहाँ बेटी नहीं, वहाँ मौन है,
जहाँ बेटी नहीं, वहाँ शून्य है।

बेटी ही है घर की ज्योति,
बेटी ही है जीवन की प्रीति।।

– अदिति ९अ

पुण्यतिथि पर पुण्यकर्मयोगी प्रो. रामचन्द्र मिश्र " मधुप " को विनम्र श्रद्धांजलि

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णाद्धार -
न्यन्यानि संयाति नवानि देही ।।
- श्रीमद्भगवद्गीता 2/22

महान मनोवैज्ञानिक, शिक्षाविद् , सुललित ओजस्वी वक्ता, कवि, मनीषी, सामाजिक चिन्तक तथा शिक्षा के क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान देने वाले हम सब के आदर्श आदरणीय प्रोफेसर रामचन्द्र मिश्र "मधुप " की पुण्यतिथि। मानव भारती देहरादून उत्तराखंड में सर्वधर्म समभाव के रूप में मनाई गई।

इस अवसर पर मानव भारती के निदेशक डॉ.हिमांशु शेखर, प्रधानाचार्य श्री अजय गुप्ता, समन्वयक जेनिफर मैम, आरती रतूड़ी मैम, संस्कृत शिक्षक डॉ. अनन्तमणि त्रिवेदी सहित सभी अध्यापक, अध्यापिकाओं, कर्मचारियों ने श्रद्धासुमन अर्पित की। 1930 में जन्मे प्रो. मधुप का 92 वे वर्ष की अवस्था में 31अक्टूबर 2021को देहावसान हो गया था। आपकी उच्च शिक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (BHU Varanasi) से हुई थी। आप एक कर्मयोगी, समाजसेवी, राष्ट्रप्रेमी, उत्तम शिक्षक के साथ एक अच्छे इंसान थे।आप मानव भारती सोसाइटी देहरादून उत्तराखंड के अध्यक्ष एवं मार्गदर्शक रहे। शिक्षा के क्षेत्र में आपका योगदान स्मरणीय तथा अभिनन्दनीय है। आज पुण्यतिथि के अवसर पर मानव भारती देहरादून परिवार आपका स्मरण करते हुए आपकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करता है। ॐ शान्तिः ।।

मानव भारती – बच्चों के क्रियाकलापों ने मन मोह लिया...

Manava Bharati School
D- Block, Nehru Colony, Dehradun 248001 Uttarakhand
E-mail.com:- hr@mbs.ac.in, Website:- www.mbs.ac.in
Phone- 0135-2669306, 8171465265, (Dr. Anantmani Trivedi - 7351351098)

मानव भारती स्कूल देहरादून के लिए प्रसारित। केवल निजी प्रसार के लिए।

संपादक - डॉ. अनन्तमणि त्रिवेदी, डिजाइन - विशाल लोधा

आत्मानं विद्धि